उपसंहार

अशोक वाजपेयी की काव्य–संवेदना तत्व विषयक अध्ययन तथा मीमांसा के उपरान्त समाहार रूप में यह कहा जा सकता है कि निस्सन्देह अशोक वाजपेयी स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता के केन्द्रीय एवं महत्वपूर्ण कवि हैं। कवि अशोक वाजपेयी का काव्य–संसार किसी हद तक विचित्र, अनोखा और विविधता से पूर्ण संसार हैं। क्योंकि अशोक वाजपेयी की काव्य–संवेदना का स्नायुजाल, पीले, हरे, भुरे आदि बहु रंगी धागों से निर्मित हैं। एक ओर वे आधुनिक कवि हैं तो दूसरी ओर प्राचीन कवि भी। कवि अशोक वाजपयी की कविता में छायावाद की रागधर्मी चेतना के साथ–साथ बदलते जीवन सन्दर्भो की आधुनिकतम विविध चेतना का अदभूत रचनात्मक विनियोग प्राप्त होता है। कवि अशोक वाजपेयी अपने वैविध्यपूर्ण काव्य संसार सहित अपने समकालीनों में कई मायनों में विशिष्ट एंव अद्वितीय कवि हैं। एक सफल कवि के अलवा आलोचक, संस्कृतिकर्मी, सम्पादक आयोजक के रूप में अशोक वाजपेयी अपनी सक्रियता, सृजनशीलता, विचारोत्तेजना और मुखरता से हिन्दी साहित्य परिदृश्य को जिस तरह से आन्दोलित करते हैं सचमुच काबिले तारीफ है। एक कवि के रूप में अशोक वाजपेयी कविता की समझ, जगह और सम्भावना को बढ़ाने, साथ–साथ कवि लेखक को समाज में योग्यस्थान दिलाने के लिए शूरु से लेकर आज तक लगातार अथक प्रयास कर रहे हैं जो कि उनके समसामयिक अन्यों में कम ही दिखाई पड़ता ह। कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में और आलोचनाओं में भी जो बातें ज्यादा आकर्षणीय और अहम लगता है वह यह कि कला या साहित्य की प्रजातांत्रिकता की हिमायती होना। हिन्दी साहित्य के परिदृश्य विचारधारा और खेमेबाजी के वर्चस्व के बोलबाला के माहौल में अपने को सम्पूर्ण तटस्थ रखते हुएँ अकेले पड़ने के बावजूद वे बुलन्द आवाज में

विरोध करते हैं जिसके चलते हिन्दी साहित्य में लगातार एक अलग उपस्थिति बने हुएँ हैं। एक आलोचक के रूप, हालाँकि जिसकी प्रतिच्छाया उनकी कविताओं में भी दखा जा सकता है। उनकी सबसे खूबी यह है कि वे अपनी दृष्टि के परे जाकर भी हमेशा सच्चे विरोध का सम्मान करते हैं।

'साहित्य' कवि अशोक वाजपेयी के लिए स्वतंत्र जीवन-प्रविधि है। साहित्य में अन्ततः जीवन की ही अभिव्यक्ति होता है। साहित्य की सामग्री कहीं और से लिया नहीं जाता है वह व्यक्ति और समाज, सम्बन्धों और भाषा, विचार और संवेदना के रासायनिक संयोग से अर्जित करता है। अतः साहित्य निराधार नहीं हो सकता। साहित्य का प्रयोजन एक नहीं अनेक हैं। क्योंकि साहित्य भी एक कला है और जीवनदर्शी कला है। जीवनदर्शी कला के स्तर बहुत होता हैं। साहित्य को सच की पनाहगार होना चाहिए और ऐसा होता है तो वह हमें 'सच' को पहचानने में मदद करती हैं। सच्चा सहित्य हमें जीवन-दृष्टि प्रदान करती हैं, जिससे जीवन और जगत को समझने और सहने में सहुलियत होती हैं। साहित्य हमारे अन्त : नेत्र को खोलती हैं और सच तो यह है मनुष्य कि को सही अर्थ में मनुष्य बनाने में और बनाकर रखने में साहित्य की भूमिका काफी दिलचस्प है। साहित्य मुश्किल वक्त में हमें राह दिखाते हैं, गिरने से बचाता है। जब कभी भी हम गलत रास्ते पर होते हैं तो वह हमें जतला देता हैं कि रास्ता और भी है। कवि अशोक वाजपयी की कविताएँ इन सब की साक्षी है। यहाँ उल्लेख किया जा सकता है कि अशोक वाजपेयी की कविताओं को लेकर, संघर्ष विमुख, समाज निरपेक्ष, सिर्फ देह और गेह का कवि आदि आरोप लगाये गये है वह हमेशा और पूर्णत : सही नहीं है। हालाँकि उनकी अधिकतर कविताओं में जीवन की ही अभिवक्ति हुई हैं। अवश्य जीवन सम्बंधी अवधारणा और दृष्टि उनकी निजी है, और उसे अपनी कविताओं में विन्यस्त करने की शैली भी। बहरहाल कवि अशोक वाजपेयी की कविताएँ और उनके समूचे कर्म

को क्रमानुसार तथा सन्दर्भ के साथ अध्ययन उपरान्त लगा कि साहित्य से उनकी भरपूर उम्मीद है और सिर्फ भौतिक जीवन में ही नहीं मरने के बाद भी साहित्य में वे कुछ समय के लिए ही सही जिन्दा रह सके है ऐसी उम्मीद करते हैं।

कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में जीवन और कविता को परस्पर अन्योन्याश्रित रूप में देखा जा सकता है। उनकी कविताओं के केन्द्र में प्रथमत: और अन्तत: जीवन ही स्पन्दित हुआ है। जीवनाभिव्यक्ति की सबसे सूक्ष्म एंव सशक्त माध्यम है कविता। जहाँ तक कवि अशोक वाजपेयी की कविता है यहाँ जीवन और कविता कहीं न कहीं एकमेव हो जाता है। इन दोनों के विकल्प चुनना मुश्किल हो जाता है। दोनों एक दूसरे को प्रेरित और परिष्कार करती हैं। कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में घात-प्रतिघात दु:ख-पीड़ा तथा तमाम मुश्किलें और परेशानियों के बावजूद जीवन का उत्सव है। अर्थात जो जीवन मिला है वह बहुत कीमती है अत: उसे नष्ट करना नहीं जीना है, और भरपूर जीना है। एक दृष्टि के रूप में और एक मजबूत कविता-सरोकार के रूप में यह उनकी कविताओं में जब-तब देखा जा सकता है। लगता है यह कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। क्योंकि दुख-पीड़ा, संघर्ष-वेदना आदि भी जीवन का हिस्सा है यदि सिर्फ उसी का रोना रोएँगे तो जीवन की गति अवरूद्ध हो जाएगी।

कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में मृत्यु को भी जीवन का एक अंश, एक अध्याय के रूप में देखा गया है। और यह भी कि आत्मा, जीवन और मृत्यु का अन्त: सम्बंध है। हालाँकि भारतोय दर्शन में भी मृत्यु को जीवन का अन्त नहीं बल्कि जीवन का परिवर्तन माना गया है, एक पड़ाव के रूप में देखा गया है। कहीं न कहीं अशोक वाजपेयी की कविताओं में वर्णित मृत्यु सम्बंधी विचारों में इसका प्रभाव रहा है। लेकिन अहम बात यह है कि आधुनिक हिन्दी कविता में जीवन के इस महत्वपूर्ण या एक चिरन्तन सत्य को दरकिनार करके रखा गया है, अशोक

वाजपेयी उसका पुन : स्थापन करते हैं। सिर्फ पुन : उद्धार तक सीमित नहीं है उनकी मृत्यु सम्बंधी कविताएँ बल्कि मृत्यु जैसे एक संवेदनशील विषय को लेकर तरह तरह से सोचते-विचारते भी हैं। जिसका प्रमाण उनकी ढेर-सारी कविताएँ हैं। जीवन का एक अनिवार्य चरण मृत्यु की सहज, ग्राह्य, वरेण्य,लीलामय और पारदर्शी उपस्थिति कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में एक तरह से दिव्यता की सृष्टि करते हैं। फिर इसी के चलते हमारे जीवन-बोध को न केवल प्रामाणिक बल्कि और गहरा भी करती हैं। अशोक वाजपेयी की मृत्यु-सम्बंधी कविताओं में से होकर गुजरने के बाद जो बातें मुझे सबसे विशिष्ट लगा वह यह कि मृत्यु जैसे एक (साधारणत :) निषेधात्मक विषय को इतना सुन्दरता और कलात्मकता के साथ एक सकारात्मक दृष्टि के रूप में उपस्थापन करना। जबकि उनकी कविताएँ यह भी याद दिलाते है कि बुनियादी चीज मरना नहीं जीना है। इन सबके बावजूद अशोक वाजपेयी की मृत्यु सम्बंधी कविताओं में जीवनासक्ति को प्रमुखता देना, मृत्यु को जीवन का स्त्रोत के रूप में देखना। और यह प्रयास भी कि अन्तत : कविता में ही सही मृत्यु को कुछ हद तक ही सही शिव और सुन्दर बनाया जाय।

बहुलतावादी दृष्टि से सम्पन्न कवि दृष्टियों की बहुलता को ही साहित्य और कलाओं के अस्तित्व का मूलाधार है मानते हैं। वे अपनी कविताओं में अन्यकलाओं को स्थान और महत्व प्रदान कर भारतीय परम्परा और भारतीय संस्कृति से आधुनिक कविता का पुनः सम्बंध स्थापित करते हैं। जाहिर है भारतीय जीवन में तथा भारतीय संस्कृति मे कविता (साहित्य) तथा अन्यान्य कलाओं के सह-अस्तित्व का स्वीकार है। लेकिन समसामयिक दौर में इस तथ्य को हिन्दी कविता अथवा साहित्य में लगभग भूला दिया था। कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं का भुगोल काफी फैला हुआ है अतः उनकी काव्य संवेदनाएँ भी विराट एंव विविधता से पूर्ण हैं। उनकी कविताओं में अन्यान्य कलाओं को सहर्ष स्वीकारा गया है। संगीत, नृत्य,

चित्र, वास्तु आदि कलाओं से सम्बंधित उनकी कविताओं में इन सब विविध कलाओं की बारीकी तथा सूक्ष्म तत्वों की जानकारी अनायास मिल जाता है। अर्थात कविता के साथ साथ अन्य कलाओं की जानकारी के अलावा आस्वाद भी सहज प्रारब्ध होता है । कविता के माध्यम से कवि अशोक वाजपेयी हमें दूसरे कलाओं से परिचित कराने के साथ ही उन सबके प्रति रूचि जगाने की भी चेष्टा करती है जिसे उनकी कविताओं की एक नई दिशा के रूप में देखा जा सकता है। साथ ही इसे एक तरह से उनकी कविता की विशिष्टता, और उपलब्धि के रूप में भी देखा जा सकता है। जाहिर है, जीवन पर कविता या साहित्य का एकाधिकार नहीं है। कविता के जैसा ही अन्यान्य कलाएँ भी मूलत : जीवन की अभिव्यक्ति हैं। अत: हमारे जीवन में कविता के साथ-साथ अन्य कलाओं का भी महत्व है। अत: विविध कलाओं के सह: सम्बंध और सह: अस्तित्व जैसे विचार सम्बलित कवि अशोक वाजपेयी की कविताएँ जीवन और जगत को देखने समझने की एक विस्तृत एवं पूर्ण-दृष्टि प्रदान करने में सहायक सिद्ध होता है। कवि अशोक वाजापेयी की इन सब कविताओं की सबसे तात्पर्यपूर्ण या महत्वपूर्ण तथ्य जिसने अधिक आह्लादित और पूलकित करते हैं वह यह कि स्वयं कवि होकर दूसरे कवि-लेखक तथा कलाकारों को इतना सम्मान देना और समाज में योग्यस्थान दिलाने के लिए बेचैन रहना और हर सम्भव पहल भी करना।

सौन्दर्य के साथ साथ असुन्दरता का चित्रण भी कवि अशोक वाजपेयी के काव्य का आ-धारभूत प्रेरक तत्व रहा है। अशोक वाजपेयी का लगभग सम्पूर्ण काव्य, कवि चेतना पर सौन्दय की सत्ता के सशक्त एंव व्यापक अधिकार की पुष्टि करता है। साथ-साथ असुन्दरता के विविध पहलुओं का उदघाटन भी अशोक वाजपेयी की कविताओं का सर्वथा मुख्य सरोकार रहा है। अशोक वाजपेयी की कवि चेतना ने सौन्दर्य के सभी स्वरूप को उनके उच्चतम परिष्कार तथा उत्कृष्टता

के साथ ग्रहण किया है जो अपनी नैसर्गिकता के कारण सहज ही व्यक्ति चेतना को अभिभूत करता है।

अशोक वाजपेयी की कविताओं में शारीरिक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति को व्यापक तथा महत्वपूर्ण स्थान मिला है। उनकी कविताओं में रूप जवानी से भरपूर युवतियाँ तथा नारी-सौन्दर्य के समग्र काव्य-चित्रों के अतिरिक्त, बहुधा नारी के विभिन्न अवयवों के सौन्दर्य की अभिव्यक्ति अत्यन्त रमणीय बन पड़ी हैं। कवि अशोक वाजपेयी की दृष्टि मात्र नारी सौन्दर्य तक ही सीमित नहीं रही अपितु नर और नारो दोनों के शारीरिक सौन्दर्य की उनकी रचनाओं में समुचित अभिव्यक्ति मिली हैं। कवि अशोक वाजपेयी ने विशेषत : नवजात शिशु तथा बाल सौन्दर्य के विभिन्न मुद्राएँ, अंग-संचालन, क्रिया-व्यापार तथा उनके जीवन की एक एक थिरकन-स्पन्दन से प्रेरणा ग्रहण करके अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। अशोक वाजपेयी की कविताओं में तन के साथ साथ मन बुद्धि एंव कर्म सौन्दर्य के भी छटा देखने को मिलता है। अशोक वाजपेयी की कवि चेतना में विद्यमान अनेक उत्कृष्ट मानवीय संस्कार तथा मानव हृदय की परिष्कृत मनोवृत्तियां उसके काव्य में व्यंजित होकर मानसिक सौन्दर्य की सृष्टि करती हैं। प्रकृति-जगत के विविध घटकों का सुन्दर और रमणीय दृश्यावली का चित्रण भी कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में देखने को मिलता है। सौन्दर्य के जैसा ही असुन्दर तत्व भी कवि चेतना को झंकृत और आन्दोलित करते हैं। अपने देशकाल में जिस तरह से असुन्दरता कोने-कोने तक व्याप्त हो गया है और असुन्दर को ही सौन्दर्य का पर्याय बनने लगे सामाजिक यथार्थ को अशोक वाजपेयी की कविताओं में जिस तरह से सिधे सपाट भाषा में तथा आक्रामक शैली में अभिव्यक्त किया गया है सचमुच यह अशोक वाजपेयी की कविताओं का एक उल्लेखनीय पक्ष है। अशोक वाजपेयी की कविताएँ केवल बाह्य असुन्दरता को ही प्रमुखता न देकर बल्कि बाहर से सुन्दर और सभ्य दिखने वाली

चीजों और व्यक्तियों के अन्दर में छ़पी हुई असुन्दरता को अधिक महत्व प्रदान कर उसे अभिव्यक्ति देते है। कवि मानव और समाज-जीवन से असुन्दर को दूर करके हर स्तर तक सौन्दर्य को बरकरार रखना अपने जीवन तथा अपनी कविताओं का ध्येय समझते हैं।

प्रेम और प्रकृति कवि अशोक वाजपेयी के काव्य के मूल प्रेरक तत्व है। इन्हीं मूल भूत सूक्ष्म शाश्वत जीवन तत्वों से प्रेरित होकर कवि अशोक वाजपेयी की कवि चेतना जीवन और जगत तथा उनके विभिन्न सरोकारों के समग्र परिप्रेक्ष्य में अभिव्यक्ति हुई है। प्रेम और प्रकृति जिस तरह से जीवन का आधार है वैसे ही कविता का भी। यह सम्पूर्ण रूप से कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं के लिए भी सठिक और संगत है। प्रेम मानव ही नहीं प्राणी मात्र की सबसे प्रबल शक्ति का नाम है, जिसे सृष्टि का कारक माना जाता है। शायद इसलिए सदियों से प्रेम स्थायी कविता-समय रहा है। कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में तो स्थायी के साथ-साथ सशक्त और प्रमुख कविता सरोकार रहा है। फिर प्रकृति का मानव तथा प्राणी मात्र के जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रहा है। जिस तरह से प्रेमहीन जीवन असम्भव है उसी तरह से प्रकृति विहीन जीवन भी सम्भव नहीं हैं। अत: विशिष्ट तथा अनुभवी कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में इन दोनों तत्वों का भरपूर उपयोग किया गया है। शुरूआती दौर की कविताओं में प्रेम और प्रकृति के रम्य आकर्षणीय, मादक और ऐन्द्रिक रूप का चित्रण देखने को मिलता है। विशेषत: प्रेम के संयोग अवस्था का चित्रण सम्बन्धी कविताओं में प्रेम पूरित हृदयों के निच्छल विनिमय के द्वारा जीवन और यौवन का सम्पूर्ण आनन्द लूट लेने और मधूर रस पान करने के कवि अशोक वाजपेयी की ललक उसके काव्य में अभिव्यक्त होकर उसे एक रमणीय आधार प्रदान करती हैं। अनेक स्थानों पर प्रेम के मांसल, मादक और रोमांचपूर्ण भावों की अभिव्यक्ति देखने को मिलता है। प्रेम के वर्जनाओं के समय में

यह एक तरह से उनका दुस्साहसिक कदम था। जैसा कि भारतीय परम्परा से इस तरह से हिन्दी कविताओं का फिर से सम्बंध जुड़ता है। जीवन–बोध का आदि स्त्रोत प्रेम, कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में विषय, भाव या दृष्टि के तहत समय के साथ–साथ विराट और व्यापकता की ओर गमण करता है। इस विकास प्रक्रिया में कवि अशोक वाजपेयी की प्रेम की प्रक्रिया का परिष्कार स्थूल से सूक्ष्म और व्यष्टि से समष्टि की ओर जाता है। प्रेम को शक्ति के रूप में उनकी कविताओं में माना गया है जिससे मनुष्य अपनी तुच्छता और होने की निस्सारता का अहसास करता है फिर इसी के चलते पूर्णता की और प्रेम के व्यापक और मानवीय अर्थो को उपलब्धि करने का रास्ता प्रशस्त होता है।

प्रकृति का भी भरपूर प्रयोग कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में देखा जा सकता है। मगर प्रयोगशील मानसिकता के कवि प्रकृति का उपयोग रीतिकालीन कवि जैसा सिर्फ आलम्बन–उद्दीपन रूप में नहीं करते हैं। प्रकृति के हर एक रूप का चित्रण कवि अशोक वाजपेयी की उनकी कविताओं में देखा जा सकता है। अधिकतर प्रकृति का प्रतीक के रूप में ही कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में प्रयोग हुआ है। व प्रकृति के रमणीय, सुन्दर, मोहक रूप के साथ–साथ, कुरूप, रौद्र और बेढब रूप का चित्रण भी करते हैं। कवि प्रकृति को जीवन की समस्याओं अनिवार्यताओं तथा प्रतिवद्धताओं के साथ संश्लिष्ट करके ही अधिक देखते हैं। कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं म अधिकतर प्रकृति को मूर्त रूप में देखा गया है। कवि ने अभिव्यक्ति के उपादानों – बिम्बों, प्रतीकों तथा उपमानों के रूप में भी प्रकृति का भरपूर उपयोग किया है। अभिप्राय यह है कि प्रकृति के प्रति कवि अशोक वाजपेयी का प्रेम और आकर्षण उनके काव्य में सर्वत्र पूरी रागात्मकता के साथ उपलब्ध होता है, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में कवि का प्रकृति–प्रेम उसकी रचना–धर्मिता को एक–सा प्रभावित तथा प्रेरित करता रहा है।

एक मनुष्य के रूप में कवि जिस परिवार, समाज या परिवेश में जन्म लेता है उस परिवेश परिस्थिति का प्रभाव उसके जीवन में जरूर पड़ता है। अत: कवि की कविताओं पर भी उस प्रभाव को देखा जा सकता है। परिवेश से कटकर कोई भी मनुष्य जिन्दा रह नहीं सकता है। फिर एक आम आदमी से कवि अधिक सजग सचेतन और संवेदनशील होते ह अत: उस पर परिवेश का असर कुछ अधिक ही पड़ता है। कवि अशोक वाजपेयी भी एक मनुष्य है, एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही पले-बढ़े हैं अत: परिवेश का असर उनपर भी होना स्वाभाविक है। जिसे उनकी कविताओं में स्पष्टत: देखा जा सकता है। फिर एक अत्यन्त जागरुक और संवेशनशील कवि अशोक वाजपेयी सिर्फ अपने समय और परिवेश तक ही सीमित नहीं रह जाते हैं। वे समय के भी कवि हैं और समयातीत के भी कवि हैं। इसके अलवा अपने समय और परिवेश को देखने की दृष्टि और नजरिया भी हर एक की अलग-अलग होती है। अत: एक कवि के रूप में कवि अशोक वाजपेयी भी अपनी दृष्टि से समाज और परिवेश को देखते हैं, सोचते फिर उसी हिसाब से अपनी कविताओं में अभिव्यक्त करते हैं। कवि अपने परिवेश और परिस्थिति के हर उन सवालों-मुददों और यथार्थ को अपनी कविताओं में जगह देते हैं जो उनकी कवि चेतनाओं को आन्दोलित और झंकृत करते हैं। आधूनिक कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में विश्वस्तर पर समसामयिक व्यक्ति और समाज के आन्तरिक और बाह्य जीवन और समस्याओं को समेटा-सहेज गया हैं। उनकी कविताएँ व्यक्ति और समाज को सापेक्ष रूप में प्रस्तुत करते हैं, रूपायन करते हैं। अवश्य कवि अशोक वाजपेयी अपने समसामयिक समाज और परिवेश के उनकी सूक्ष्म दृष्टि से देखते है वे समाज और जीवन के ऐसे प्रश्नों के उत्तर दूँढ़ती है जिसे प्राय: अनदेखा किया जाता है। वे समग्र और सम्पूर्ण जीवन के कवि हैं और उनकी कविताओं में समग्र जीवन की अनुभूति ही अभिव्यक्ति हुई हैं। अपने समय और

समाज के तनाव और संघर्ष का यथार्थ भी उनकी कविताओं में जब-तब देखा जा सकता है. उनकी कविताओं में मुख्य सरोकार मनुष्य ही है। वे अपने समसामयिक समस्याओं उलझनों और संघंर्षो से मुह नहीं चुराते हैं बल्कि कई बार अन्यों के मुकाबले कहीं ज्यादा आक्रामक ढंग से मुखातिब होते हैं जिसका साक्ष्य उनकी कविताएँ हैं। न्याय, स्वतंत्रता और समता ही उनकी कविताओं का मुख्य सरोकार रहा है। उनकी ढेर सारी कविताओं में अपने समय और परिवेश के हर वर्ग के हर प्रकार के संघर्ष और समस्याओं का चित्रण जैसे निम्नमध्यवर्गीय असहाय आम आदमी की जिन्दगी का यथार्थ, मजदूरों की दमनीय स्थिति, व्यक्ति की विवशता, तथा सामाजिक ढाँचे के अवरोधों, मध्यमवर्ग के मजबूरियाँ, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, कुंठा, संत्रास, शासन से उत्पन्न विकृतियाँ, लोकतन्त्र में व्याप्त अराजकता, व्यवस्था विरोध, नारी की विवशता, राजनेताओं के भ्रष्टता, युद्ध की विभीषिका, सम्बंधहीनता, कराहते मानवीयता आदि विभिन्न जलन्त और प्रमुख समस्याओं का जीता-जागता और सजीव चित्रण उनकी कविताओं में जब-तब देखा जा सकता हैं। अवश्य कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में कुछ कविताएँ हैं जहाँ कवि सिर्फ अपनी निजी अनुभव और समस्याओं का जिक्र करते जैसा लगता हैं। फिर मनुष्य के केवल मन या हृदय को प्रमुखता प्रदान करते हुए जीवन का उत्सव मनाने जैसा अनुभव होता है। हालाँकि उनके समसामयिक अन्य कवियों से वे इन्हीं कारणों से अलग-थलग पड़ जाते हैं। अवश्य व्यक्तिगत अनुभव और व्यक्ति मन की भावनाएँ आदि भी जीवन और समाज का हिस्सा है, सच्चाई का अंश है।

एक कवि के अलवा आलोचक अशोक वाजपेयी की छबि और भूमिका काफी सशक्त और सराहनीय हैं। आधुनिक हिन्दी कविता को समझने में उनकी आलोचनाएँ यथेष्ट कारगर सिद्ध होती हैं। काव्यालोचन के प्रतिमान निर्धारण में

उनकी भूमिका अतुलनीय हैं। बहरहाल कवि अशोक वाजपेयी की कविताएँ बनी-बनाई काव्यालोचन के प्रतिमान के बरक्स कहीं आगे निकल जाती हैं। अवश्य यह हाल हर जगह नहीं हैं अधिकतर उनकी काव्य-भाषा और अभिव्यक्ति पक्ष में देखा जा सकता है। आधुनिक कवि अशोक वाजपेयी के काव्य-चेतना में हमेशा प्राचीन और अर्वाचीन तत्वों का संमिश्रण रहा है। उनकी कविताएँ इसका ज्वलन्त प्रमाण हैं। भाव-विचार, भाषा-शैली सभी क्षेत्रों में यह हाल मौजूद है। आधनिक कवि अशोक वाजपेयी के आधुनिक चिन्तन और चेतना का उद्‌गम तथा स्त्रोत हमेशा भारतीय परम्परा रहा है। उनकी कविताओं में इस तरह से आधुनिकता और परम्परा का अटूट सम्बंध हमेशा विद्यमान है। परम्परा के अनुरक्त और अनुग्रहीत कवि परम्परा का अंधानुकरण न करके प्रयोगशील मानसिकता सम्पन्न कवि अपने निजी प्रयोगशाला में परीक्षा करके ही प्रयोग करते हैं। परम्परा से भावनात्मक स्तर तक सम्बन्ध रखनेवाले कवि अशोक वाजपेयी साथ-साथ परम्परा के नवीनीकरण के सिद्धान्त में भी विश्वासी हैं। कवि अशोक वाजपेयी की कविताओं में यह तत्थ्य प्रबल रूप में उभरता है कि हमारी परम्पराओं में इतनी सारी अच्छाइयाँ हैं जो इमें मानव जीवन का रहस्य छूने में और मानवीयता को उत्जीवित करने और रखने में प्रेरक तत्व के रूप में कारगर साबित हो सकता ह। मूलत: कवि अशोक वाजपेयी अपनी परम्परा-सम्बंधी कविताओं में एक तरफ परिवर्तनशील परिवेश और दूसरी तरफ कुछ हदतक एक सनातन परिवेश के बीच जो तनाव और द्वंद्व है उसे छूँने की कौशिश करते हैं भाषा और शैली की दृष्टि से अत्यन्त सजग-सतर्क कवि अशोक वाजपेयी के काव्य का अभिव्यंजना-पक्ष अत्यन्त प्रौढ़, प्रांजल, सुगठित एंव प्रभावी हैं, जिसके कारण उनकी कविताओं में कलात्मक सौन्दर्य देखते ही बनता है। शब्द को परब्रह्म माननेवाले कवि अशोक वाजपेयी शब्द को अभिव्यक्ति का परम विश्वसनीय सम्बल, सबसे मौलिक और प्राथमिक उपादान मानते हुए स्वच्छ निष्कलुष एंव

कान्तिमान शब्द की कल्पना ही उनका परम पुरुषार्थ रहा है। कवि अशोक वाजपेयी की प्रकृेत एवं नैसर्गिक काव्य-प्रतिभा के कारण भाषा, शब्द-योजना, छन्द, अलंकार, लय, ध्वनि, बिम्ब, प्रतीक और उपमान आदि अभिव्यंजना के विभिन्न उपादानों पर कवि का असाधारण अधिकार है। वस्तुतः भाषा के जादुगर कवि अशोक वाजपेयी एक जन्मजात काव्य प्रतिभा के धनी, अन्तदृष्टि सम्पन्न कवि के रूप में अपनी कविताओं में अपनी भावनाओं को विविध रूप में अभिव्यक्त करने में पूर्णतः सफल रहे हैं। विशेषतः ललित कलाओं-संगीत-नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला के तत्वों व उपादानों के प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष योग से कवि अशोक वाजपेयी का अधिकांश काव्य बहुत रमणीय, रंजक, व प्रभावी हो गया है। बिम्ब-बिधान के सौन्दर्य न अधिकांश काव्य में प्राण डाल दिये हैं। कवि अशोक वाजपेयी के काव्य में वस्तु और शैली का मधुर सम्बंध अत्यन्त मोहक है। उनका काव्य जीवन मूल्यों की दृष्टि से सम्पन्न होकर समग्र रूप में सांस्कृतिक स्तर और गौरव को प्राप्त हो गया है। जीवन की विकासोन्मुख दृष्टियाँ, जीवन का यथार्थ व आदर्श, मानव-चेतना के परिष्कार व उन्नयन की विपुल सामग्रियाँ उसमें आदि से अन्नतक भरी पड़ी हैं।

कवि अशोक वाजपेयी हिन्दी के वरेण्य कवियों की सुदीर्घ श्रृंखला की एक मूल्यवान और सुदृढ़ कड़ी के रूप में दिखाई पड़ते हैं। उनके काव्य के सरोकार व प्रेरणा-स्त्रोत जीवन और जगत की भूमियों में गहरे जुड़े हुए और अत्यन्त वेगवान हैं। आज भी हिन्दी साहित्य परिदृश्य में उनकी सक्रिय उपस्थिति बनी हुई है।

हिन्दी कवियों में एक अनुभूति प्रवण, विचार-समृद्ध व चेतनास्फूर्त दृष्टा कवि अशोक वाजपेयी हिन्दी कविता के इतिहास में सदैव एक विशिष्ट स्थान का अधिकारी बना रहेगा। ऐसी उम्मीद जरूर की जा सकती है।

अपनी ज्ञान की सीमा को जानते हुए स्वीकारता हूँ कि यह अध्ययन सम्पूर्ण नहीं हैं। कवि अशोक वाजपेयी आज भी हिन्दी साहित्य परिदृश्य पर एक सक्रिय उपस्थिति

बने हुए हैं। फिर उनकी आलोचना का भी इसमें समावेश नहीं किया गया है, परन्तु अगर यह शोध-प्रबन्ध अशोक वाजपेयी-काव्य के अध्ययन की नयी दिशा उदघाटित कर सके, तो मैं अपना प्रयास सार्थक समझुँगा।